उतावला तोता

The Hasty Parrot

एक था तोता और एक थी बुढ़िया। बुढ़िया रहती थी एक झोपड़ी में। झोपड़ी के पास था एक पेड़। उस पर रहता था एक तोता।

दोनों में गहरी दोस्ती थी।

एक दिन बुढ़िया बाज़ार से एक आम खरीद कर लाई। आम देखकर तोते के मुंह में पानी आ गया। वह बोला, ''मुझे भी आम दो।''

बुढ़िया ने कहा, ''जा पहले अपनी चोंच धो कर आ, फिर आम खाना।''

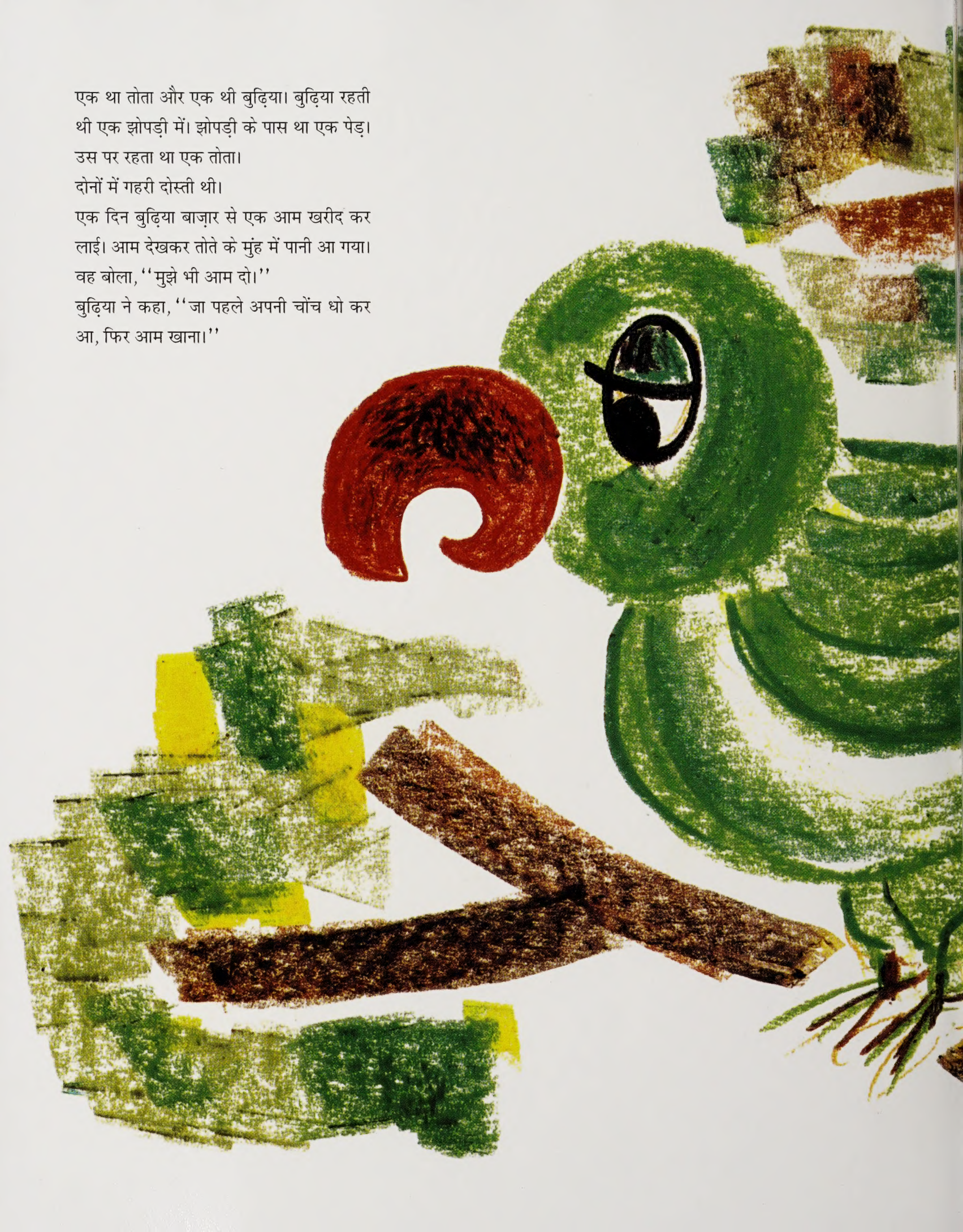

There was a parrot and an old woman. The old woman lived in a hut. Near the hut, there was a tree which was the parrot's home.

The parrot and the old woman were great friends.

One day the old woman went shopping and bought a mango. On seeing the mango, the parrot's mouth watered and the parrot said, "Give me some mango."

"Go! wash your beak first, then eat

तोता चला चोंच धोने। नदी के किनारे पहुँचा, तो वहां पानी बहुत था। नदी गहरी थी। तोता चोंच धोये तो कैसे धोये? चोंच ऊंची कर उसने इधर-उधर देखा। फिर वह नदी से बोला,
''नदिया, नदिया, दे जल्दी से मुझको पानी, पानी पाकर धोऊँ चोंच और खाने को पाऊं आम।''
नदी ने कहा, ''पहले तुम मटका ले आओ और फिर पानी भरकर चोंच धो लेना।''
तोता कुम्हार के पास गया और बोला,
''कुम्हार, कुम्हार, दो मटका। मेरा काम तुम्हीं से अटका। पानी पाकर धोऊं चोंच और खाने को पाऊं आम।''

the mango," the old woman replied.
The parrot took off to wash his beak.
He reached the river bank.
But the river was deep and full. How to wash his beak, he wondered. He lifted his beak, looked around and said to the river, "River, river, give me water to wash my beak. I will then get a mango to eat."
The river replied, "Get a pitcher, fill it with water and wash your beak."
Away flew the parrot to the potter and said, "Potter, potter, make me a pitcher. I will fill it with water, wash my beak and get a mango to eat."

कुम्हार बोला, ''तुम्हारी बात कैसे टालूं? मुझे थोड़ी सी मिट्टी ला दो। फिर तुम्हें मटका बना दूंगा।''

तोता उड़कर धरती के पास गया। धरती के ओर छोर तक घूमने के बाद चोंच गड़ा कर धरती से बोला,

''धरती, धरती, दे माटी कुम्हार मांगे गीली माटी।
माटी से पाऊं मैं मटका। मेरा काम उसी से अटका।
पानी पाकर धोऊं चोंच
और खाने को पाऊं आम।''

धरती बोली, तेरे लिये मैंने कब मना किया। जितनी मिट्टी चाहे खोद लो। हां, ऐसा करो पहले लुहार के पास जाकर कुदाल ले आओ।''

तोता लुहार के पास गया और बोला,

"How can I refuse? Get me a little clay to make the pitcher for you," said the potter.

The parrot took to his wings and went to the earth. He circled around, dug his beak into the earth and said, "Earth, earth, I need clay for the potter to make a pitcher.

I will fill it with water, wash my beak and get a mango to eat."

The earth replied, "I never said no.

You can dig as much clay as you want. But first go to the blacksmith and get an iron spade."

The parrot went to the blacksmith and said,

''लुहार, लुहार, दे कुदाल।''

लुहार ने तोते के कहने से कुदाल बना दी। लाल कुदाली उसने भट्टी से निकली और ठंडी होने के लिये रख दी।

पर तोते को चैन कहां? बोला, ''क्या इसे अब ले जाऊं?''

''अभी नहीं, गरम जो है, थोड़ी देर बाद ले जाना,''

लुहार बोला।

पर तोते को तो जल्दी थी। कुदाल को झपट कर उसे चोंच में पकड़ लिया। कुदाल गरम थी। छूते ही उसकी चोंच जल गई। तोता छटपटाया। पर अब हो क्या सकता था। न चोंच धो सका, न आम खा सका।

'' बिना सोचे-समझे जल्दबाजी करने का फल अच्छा नहीं होता।''

"Blacksmith, blacksmith, make me an iron spade."

The blacksmith fulfilled the parrot's wish and made the spade which he took out from the red hot furnace and put it aside to cool. The parrot became impatient and said, "Shall I take it."

"Not yet, it's hot, wait a while,"

said the blacksmith.

But the parrot was in a mighty hurry. He leapt forward to hold the spade between his beak. The spade was still hot and it singed his beak. He flapped his wings in pain.

The parrot neither washed his beak, nor ate the mango.

Haste without thought yields no fruit.

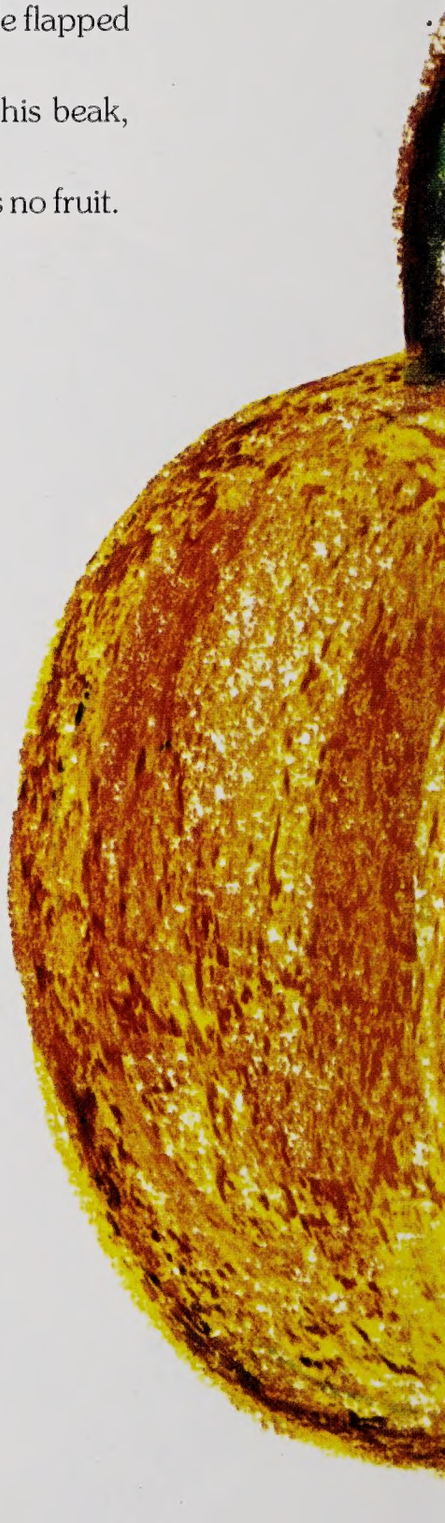

महानिदेशक, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15-ए, सेक्टर 7, द्वारका,
नई दिल्ली - 110075 द्वारा प्रकाशित

अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,
डब्लू - 30, ओखला इन्डिस्ट्रयल एरिया, फेस 2,
नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित

Published by Director General
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector 7, Dwarka,
New Delhi - 110075

Printed at
Aravali Printers & Publishers (P.) Ltd.
W-30, Okhla Industrial Area, Phase - 2
New Delhi - 110020

चित्र व आलेख : विजय परमार
Illustrations and text : Vijay Parmar